

केन्द्र संख्या को मुहर

केन्द्र व्यवस्थापक के हस्ताक्षर

नोट-परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका के किसी भी भाग में अपना नाम व केन्द्र का नाम न लिखें।

केन्द्र सं- 0312

'ब' उत्तरपुस्तिका की संख्या-
हस्ताक्षर कक्ष निरीक्षक-

ब ₁	ब ₂	ब ₃	ब ₄

नोट-केन्द्र के नाम की मुहर उत्तरपुस्तिका के किसी भी भाग पर न लगाएं।

परीक्षार्थी द्वारा भरा जायेगा-

परीक्षक, निम्न तालिका में प्रत्येक प्रश्न तथा उसके खण्डों के प्राप्तांकों का विवरण यथास्थान भरें।

अनुक्रमांक (अंकों में)-

अनुक्रमांक (शब्दों में)-

विषय- जीव विज्ञान

प्रश्नपत्र संकेतांक-

431 (IOC)

परीक्षा का दिन-

02.03.2024 शनिवार

परीक्षा तिथि-

02.03.2024

कक्ष निरीक्षक द्वारा भरा जाय-

केन्द्र संख्या-

परीक्षा कक्ष संख्या-

05

उपरोक्त सभी प्रविष्टियों की जाँच मेरे द्वारा सावधानीपूर्वक कर ली गयी है।

कक्ष निरीक्षक का नाम- नवीन चन्द्र जोशी

दिनांक- 02/03/2024

हस्ताक्षर कक्ष निरीक्षक-

प्रमाणित किया जाता है कि मैंने इस उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन समुचित प्रश्न-पत्र संकेतांक तथा मूल्यांकन निर्देशों के अनुसार किया है। प्राप्तांकों का मुखपृष्ठ पर अग्रसारण कर प्राप्तांकों एवं प्राप्तांकों के योग का मिलान कर लिया गया है। एवार्ड ब्लैंक में प्राप्तांकों की अंकना कर उनका पुनः मिलान भी कर लिया है। किसी भी प्रकार की त्रुटि के लिए मैं उत्तरदायी रहूँगा/रहूँगी।

परीक्षक के हस्ताक्षर एवं संख्या

1. अंकक्षक के हस्ताक्षर एवं संख्या

2. अंकक्षक के हस्ताक्षर एवं संख्या

प्रश्न संख्या	क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	योग
01											
02											
03											
04											
05											
06											
07											
08											
09											
10											
11											
12											
13											
14											
15											
16											
17											
18											
19											
20											
21											
22											
23											
24											
25											
26											
27											
28											
29											
30											
31											
32											
33											
34											
35											

सन्निरीक्षा प्रयोगार्थ

सन्निरीक्षा पूर्व अंक-

सन्निरीक्षा पश्चात् अंक-

त्रुटि का प्रकार-

दिनांक-

हस्ताक्षर निरीक्षक-

08/04/24

योग (शब्दों में) योग (अंकों में)

दिन एवं तिथि इत्यादि विवरण सही-सही लिखें। वह कार्य प्रतिदिन परीक्षा के समय भविष्य में करना चाहिए।

- (2) आवरण पृष्ठ अथवा उत्तरपुस्तिका के भीतर किसी भी स्थान पर अपना नाम, केन्द्र का नाम किसी भी स्थिति में न लिखें।
- (3) आवरण पृष्ठ की प्रविष्टियाँ भरने के अतिरिक्त परीक्षार्थियों को निर्धारित समय से पूर्व अपनी उत्तरपुस्तिका में कुछ भी नहीं लिखना चाहिए।
- (4) उत्तरपुस्तिका के प्रत्येक पन्ने के दोनों ओर तथा लाईन पर लिखें। बीच-बीच में पृष्ठ खाली छोड़कर पृष्ठ नष्ट न करें।
- (5) आवश्यक रफ कार्य उत्तरपुस्तिका के केवल बाँयें पृष्ठ पर ही करें, बाद में रफ कार्य को पेन से काट दें।
- (6) उत्तरपुस्तिका से कोई भी पन्ना नहीं फाड़ना चाहिए।
- (7) पहली उत्तरपुस्तिका में लेखन कार्य पूर्ण होने के पश्चात् ही दूसरी उत्तरपुस्तिका दी जायेगी।
- (8) प्रत्येक प्रश्न के उत्तर के साथ उसकी प्रश्न संख्या तथा खण्ड संख्या स्पष्ट रूप से अंकित करें।
- (9) यदि आपने परीक्षा के दौरान ग्राफ पेपर, नक्शा या 'ब' उत्तरपुस्तिका ली हो तो उसे मुख्य उत्तरपुस्तिका (अ) के साथ अच्छी प्रकार से नत्थी कर दें।
- (10) केन्द्रव्यवस्थापक, कक्ष निरीक्षकों एवं सचल दल को परीक्षा में सम्मिलित होने वाले परीक्षार्थियों की तलाशी लेने का अधिकार है।
- (11) परीक्षार्थियों को चाहिए कि प्रतिदिन परीक्षा भवन में प्रश्न-पत्र वितरण के पूर्व ही वह अपने डेस्क की तथा अपनी तलाशी ले लें। जो परीक्षार्थी नकल अथवा बात करते पकड़े जायेंगे या परीक्षा भवन में कागज अथवा पुस्तक अपने साथ लायेंगे, उनके विरुद्ध नियमानुसार आवश्यक कार्यवाही की जायेगी तथा परिषद् के निर्णयानुसार उनको दण्ड दिया जायेगा।
- (12) यदि कोई परीक्षार्थी प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप में प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने के लिए परीक्षक के ऊपर किसी प्रकार का कोई भी दबाव डालने का प्रयत्न करेगा, तो उसके विरुद्ध आवश्यक कार्यवाही की जायेगी तथा परिषद् के नियमानुसार उसको दण्ड दिया जायेगा।
- (13) परीक्षार्थियों को केवल नीली एवं काली स्याही का प्रयोग करने की अनुमति है। लाल एवं हरी स्याही का प्रयोग वर्जित है।

असमानता (क)

(iv) बुचरोरिया से

(घ)

(iv) सूक्ष्मजीवों द्वारा

(ग)

(iii) सान्त्व इन्सुलिन

(घ)

(i) विटामिन 'A'

(ङ.)

(ii) 1:2:1

(च)

(ii) मधुमक्खी से

(इ)

(i) 1971

(ज)

(i) हृदय

(झ)

(iii) A सही है किन्तु R गलत है।

(ञ)

(iii) A सही है परन्तु R गलत है।

प्रश्नोत्तर संख्या 3.

सिकेल सेल रक्तिमिया

प्रश्नोत्तर संख्या 4.

स्ट्रेप्टोकोकस जिमोनी एवं हिमोफिलिस संप्लुरंजा

प्रश्नोत्तर संख्या 5.

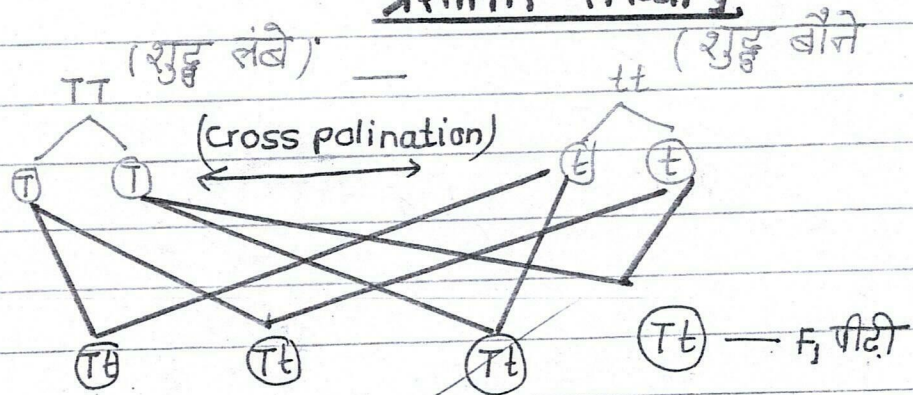
बीटी- बीटी एक प्रकार का जीव विष है जो बैसिलस थुरिंजिस नामक जीवाणु के विभिन्न प्रभेदों से प्राप्त होता है।

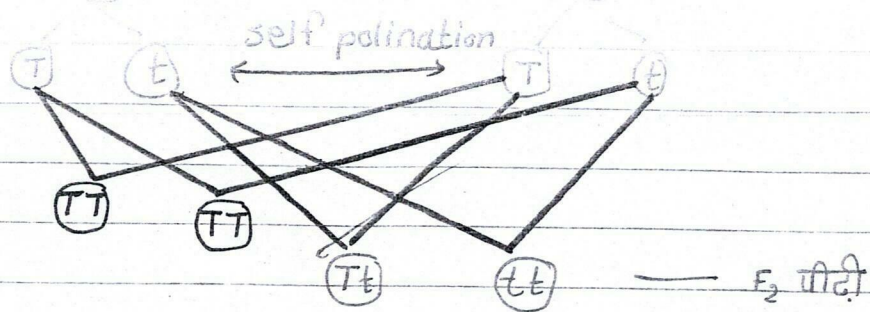
प्रश्नोत्तर संख्या 8.

त्वक्कत अपरा द्वारा स्रावित हार्मोन्स-

- (1) HCG (ह्यूमन कोरिओनिक गोनैडोट्रोपिक हार्मोन)
- (2) HPL (ह्यूमन प्लेसेन्टल लेक्टोजन हार्मोन)
- (3) एस्ट्रोजन
- (4) प्रोजेस्टेरोन

प्रश्नोत्तर संख्या 9.



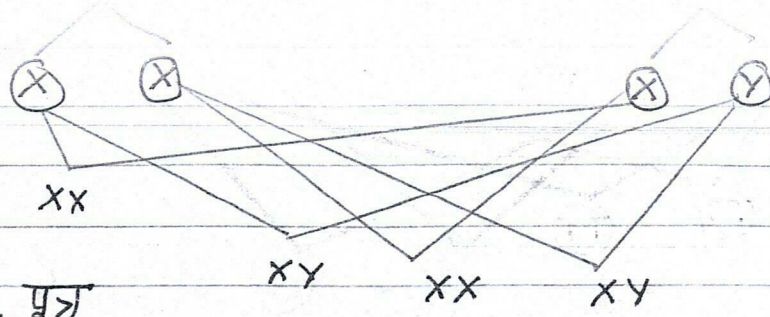


चित्रानुसार, F_1 पीढ़ी में विषमयुग्मजी लंबे पौधे एवं F_2 पीढ़ी में 2 लंबे पौधे (समयुग्मजी), 1 विषमयुग्मजी लंबा पौधा एवं 1 समयुग्मजी बौना पौधा प्राप्त हुए।

प्रश्नोत्तर संख्या 10

लिंग निर्धारण - नर के x एवं y लिंग गुणसूत्र युक्त शुक्राणु एवं मादा के xx लिंग गुणसूत्र युक्त अणुाणु के निषेचन के फलस्वरूप बने शुक्राणु युग्मनज की प्रकृति के निर्धारण की प्रक्रिया लिंग निर्धारण कहलाती है।

- मानव में 23 जोड़ी अर्थात् 46 गुणसूत्र होते हैं, जिसमें से 22 जोड़ी गुणसूत्र समजात एवं 23 वां जोड़ी गुणसूत्र लिंग गुणसूत्र होता है।
- जब निषेचन के समय नर का x लिंग गुणसूत्र, मादा के x लिंग गुणसूत्र से मिलता है, तब xx जोड़ा बनेगा अर्थात् संतान पुत्री होगी।
- इसी प्रकार, जब नर का y लिंग गुणसूत्र, मादा के x लिंग गुणसूत्र से मिलता है, तो xy जोड़ा बनेगा अर्थात् संतान पुत्र के रूप में होगी।



50% पुत्र
50% पुत्री

प्रश्नोत्तर संख्या 11.

बालक की 12-18 वर्ष की अवस्था किशोरावस्था के अंतर्गत आती है, यह वह अवस्था जो बाल्यावस्था को युवावस्था से जोड़ती है, इसी उम्र में किशोर द्रुग और संस्कूलों के सेवन के लिए प्रेरित होते हैं - कुछ कारण निम्न हैं-

- (1) किशोर की प्राकृतिक जिज्ञासा, प्रतियोगिता की अंधी दौड़ एवं नशे की प्रगति का सूचक मानना।
- (2) टेलीविजन, सिनेमाघरों में हीरो की शराब, सिगरेट पीकर बड़े-बड़े काममें करते देखना।

उपाय

- (1) अनुशासन द्वारा (अनुशासन वह आदत या क्रिया है जिससे दुर्व्यसनों से बचा जा सकता है)।
- (2) माता-पिता, परिवारजनों एवं अपने सहपाठियों के अनावश्यक दबाव से बचें।
- (3) प्रशिक्षित एवं चिकित्सीय डॉक्टरों की सलाह ली जानी चाहिए।

(क) बायोरिएक्टर- यह एक ऐसा पात्र है जिसमें जीव कौशिकाएँ जैसे सूक्ष्मजीवों, जंतुओं, पादपों एवं मात्तव कौशिकाओं से जैविक रूप से कच्चे माल की व्यावसायिक स्तर पर विशिष्ट उत्पाद जैसे एंजाइम आदि में परिवर्तित किया जाता है। Ex- विलोडन

(ख) रासायनिक सुरक्षा परीक्षण- विभिन्न खाद्य पदार्थों एवं विशिष्ट उत्पादों की खाद्य विषाक्तता की जाँच पारजीवी जंतुओं द्वारा की जाती है, जहाँ इन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। यह प्रक्रिया रासायनिक सुरक्षा परीक्षण कहलाती है।

प्रश्नोत्तर संख्या 13

आनुवंशिकता : रूपांतरित पौधों के उपयोग के लाभ-

(1) अजैव प्रतिबलों जैसे सूखा, ताप, लवण आदि के प्रति अधिक सहिष्णु फसलों के निर्माण में।

(2) खाद्य पदार्थों में पोषण स्तर में वृद्धि Ex-Vit A, समृद्ध धान 'गोल्डन राइस'।

प्रश्नोत्तर 14.

→ मात्तव इंसुलिन एक प्रोटीन हार्मोन है जो दो पॉलिपेटाइड शृंखलाओं से निर्मित होता है, जिन्हें शृंखला A एवं शृंखला B नाम दिया है।

होती है।

→ किसी प्राक संज्ञा की तरह प्राक हार्मोन को भी परिपक्व एवं क्रियाशील होने के लिए प्रसंस्करण की आवश्यकता होती है।

→ इंसुलिन भी अपनी प्राक अवस्था में तीन पॉलिपेटाइड मूलकों से बना होता है, जिसे पेटाइड 'सी' कहते हैं, फलस्वरूप इसे इस अवस्था में इंसुलिन के रूप में नहीं प्राप्त किया जा सकता है।

→ इसलिए, पेटाइड 'सी' क्रियाशील एवं परिपक्व होकर मानव इंसुलिन 'इंसुलिन' का निर्माण करती है।

प्रश्नोत्तर संख्या 15

ग्रीन हाउस प्रभाव का बढ़ता स्तर हमारे पर्यावरण के लिए एक अत्यंत स्थिति है, इसके प्रभाव के कारण निम्नलिखित हैं -

(1) पेड़ों की अंधाधुंध कटाई के कारण प्रदूषण का बढ़ता स्तर।

(2) फेक्ट्रियों से निकले विभिन्न प्रकार के रसायनों एवं धुएँ से उत्पन्न CO_2 , SO_2 आदि गैसों की मात्रा में वृद्धि।

प्रश्नोत्तर संख्या 17

प्रथम स्तन्य या खीस (Colostrum)

प्रसव के आरंभिक दिनों में स्त्री के स्तनों से निकलने वाला दूध 'प्रथम स्तन्य या खीस' कहलाता है। इसका स्रावण आरंभिक पाँच दिनों तक होता है, यह पीले एवं गाढ़े संतरी रंग का पदार्थ होता है।

नवजात शिशु के लिए महत्व

- (*) यह शिशु के पहली बार उत्सर्जन में सहायक होता है।
- (*) इसमें उच्च मात्रा में कोलेस्ट्रॉल पाया जाता है जो शिशु के तंत्रिका तंत्र का विकास करता है।
- (*) कोलोस्ट्रम 'IgA' से सम्पन्न होता है, जो शिशु को संक्रमणों से बचाकर उसकी प्रतिरक्षा तंत्र में वृद्धि करता है।
- (*) कोलोस्ट्रम में Ca, vit 'A', vit 'K', K एवं Zn जैसे पदार्थों की उपास्थिति शिशु के संपूर्ण विकास में सहायक है।

प्रश्नोत्तर संख्या 17.

फल मक्खी का वैज्ञानिक नाम 'ट्रोसोफिला' है। वैज्ञानिक T.H. Morgan को अपने इस ट्रोसोफिला में किए गए कार्य के विषय में जानकारी देने के लिए नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ।

साथ काम करना पसंद आया। इसके निम्न कारण थे-

(1) ट्रोसोफीला की जनन प्रक्रिया तीव्र होने के कारण इसके जीनोटाइप, फीनोटाइप एवं लक्षणों की प्राप्ति के लिए लंबा इंतजार नहीं करना है।

(2) इसमें लिंग सहस्रग्न संबंधी गुणों की जांच आसान थी एवं इसका भी डेटा, स्व आसानी से प्राप्त की जा सकती है।

प्रश्नोत्तर संख्या 18.

वंशावली विश्लेषण -

वंश वृक्ष या आरेख के रूप में किसी लक्षण विशेषकों की पीढ़ी-दर-पीढ़ी रिकॉर्ड या अभिलेख को वंशावली विश्लेषण कहा जाता है। इस विधि में मनुष्यों की दो या दो से पीढ़ियों को वंश वृक्ष के रूप में प्रदर्शित किया जाता है।

यह विश्लेषण निम्न प्रकार से उपयोगी है-

(1) मनुष्यों में विभिन्न जैविक एवं नैतिक कारणों से तुल्यार्थ संकरण करना संभव नहीं है, अतः वंश वृक्ष की सहायता से आनुवंशिक विकारों की पहचान की जा सकती है।

(2) वंशवली विरक्षण का मरुद में काला जल का उपका संतानों में होने वाली असामान्यताओं एवं विकारों के बारे में समय से पूर्व अवगत कराया जा सकता है।

(3) वंशवली विश्लेषण के कारण मनुष्य के लिंग सहलग्न आनुवांशिक विकारों संबंधी हमारा ज्ञान समृद्ध हुआ है।

प्रश्नोत्तर संख्या 20

(क) जैव उर्वरक

जैव उर्वरक के निर्माण में जीवाणुओं, सायनोबैक्टीरिया एवं कवकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जैव उर्वरक मिट्टी की उर्वर क्षमता एवं उत्पादकता में उच्च वृद्धि करते हैं, मिट्टी की जलधारण क्षमता एवं गठन को बनाए रखते हैं। मृदा में वायु का संचार बढ़ाते हैं।

इसका निर्माण विभिन्न अपशिष्टों जैसे सड़े-गले पदार्थों से किया जाता है।

(ख) B.O.D.

एक लीटर जल में उपस्थित कार्बनिक पदार्थों की मात्रा को सूक्ष्मजीवों द्वारा क्षय करने में ली गई ऑक्सीजन की मात्रा को 'BOD' कहा जाता है।

प्राकृतिक चयन

जीवों के कुछ शरीरस उन्हे अन्य की अपेक्षा बेहतर अनुकूलित बनाकर प्रजनन एवं उत्तरजीविता हेतु अधिक सफल बना देते हैं, प्रकृति इन्ही को उत्तरजीविता के अधिक अवसर प्रदान करती है। प्रकृति द्वारा किया गया यह चयन 'प्राकृतिक चयन' कहलाता है।

प्रश्नोत्तर संख्या 21

पुनर्योगज DNA - एक जीव के DNA को दूसरे जीव के DNA के साथ जोड़ना 'पुनर्योगज DNA' कहलाता है।

इसके निम्नलिखित प्रकार हैं -

(1) DNA खण्ड का पृथक्करण -

DNA के जिस विशिष्ट खण्ड या भाग की प्रतिकृतियों करनी होती है उसे प्रतिबंधन एंडोन्यूक्लियेज एंजाइम द्वारा पृथक् कर लिया जाता है।

(2) DNA खण्ड को वाहक से जोड़ना

जीवाणुशोधी एवं लाज्मिड का प्रयोग वेक्टर के रूप में किया जाता है। इसमें कुछ विशिष्ट स्थल होते हैं, इन स्थलों पर इन्हे काटकर वांछित DNA खण्ड को लाज्मिड एंजाइम द्वारा जोड़ा जाता है।

इसे पुनर्योगज DNA कहते हैं।

प्राप्त पुनर्योगज DNA को परपोषी कोशिका में प्रविष्ट कराया जाता है, इस प्रक्रिया को 'संपांतरण' कहा जाता है। E. coli का उपयोग परपोषी कोशिका के रूप में किया जाता है।

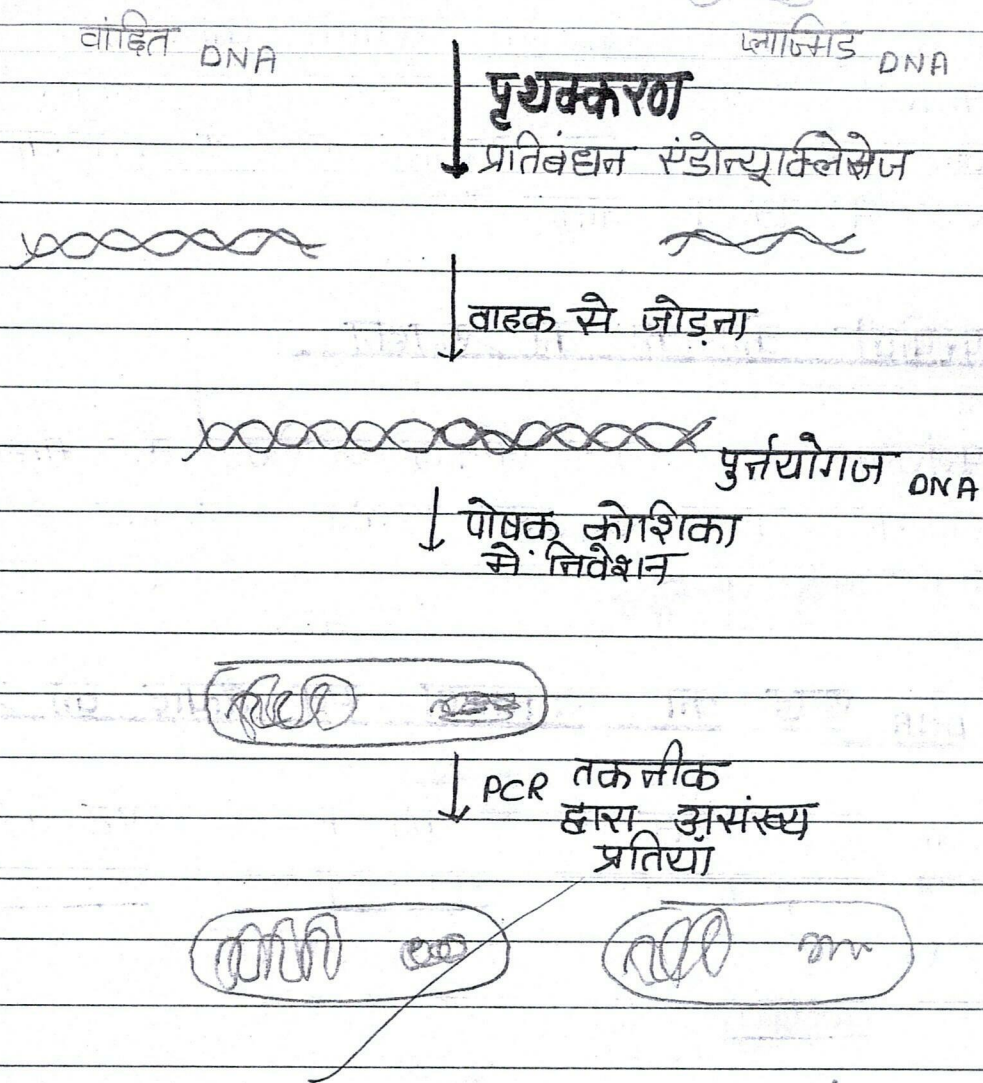
(4) परपोषी कोशिका का संवर्धन

पुनर्योगज DNA युक्त जीवाणु कोशिका को माध्यम में संवर्धित किया है, जहाँ परपोषी कोशिका में वृद्धि के साथ वांछित DNA खण्ड में भी वृद्धि होती है, ^{की संख्या}

(5) DNA खण्ड का पृथक्करण एवं उत्पाद की प्राप्ति

DNA खण्ड, जिस जीवाणु कोशिका में प्रविष्ट कराया गया था, के अंदर अनुलेखन एवं अनुवादित प्रारंभ करता है। साथ ही वांछित DNA / जीन का उत्पादन होता रहता है।

वांछित DNA की असंख्य प्रतियाँ प्राप्त करने के लिए PCR तकनीक का प्रयोग किया जाता है एवं DNA खण्ड के पृथक्करण हेतु जेल इलेक्ट्रोफोरेसिस का प्रयोग होता है।



प्रश्नोत्तर संख्या 22

(क) पारिस्थिक पिरामिड-

किसी पारितंत्र में खाद्य शृंखला का अरेखीय प्रदर्शन पारिस्थिक पिरामिड कहलाता है, इसका आधार उत्पादक एवं शिखरा को क्रमिक स्तर उपभोक्ता द्वारा बनता है।

(ख) उत्पादकता

प्रति इकाई समय में उत्पादकों एवं उपभोक्ताओं द्वारा जैवभार में परिवर्तन की दर को उप 'उत्पादकता' कहा जाता है।

(ग) जैव भार

जैविक कोशिकाओं से संपूर्ण जल के हटने के पश्चात् उसमें उपस्थित शुष्क भार को 'जैव भार' कहा जाता है।

प्रश्नोत्तर संख्या 23

(क) पवित्र उपवन

भारतीय संस्कृति एवं परम्पराओं में वन संरक्षण हेतु अतिरिक्त सू-भार होड़े जाते हैं, जिन्हें पवित्र उपवन कहा जाता है। इनमें वृक्षों की पूजा की जाती है, यहाँ पौधों की तोड़ने की अनुमति नहीं होती है।

Ex- राजस्थान की अरावली, खाँसी आदि।

(ख) राष्ट्रीय पार्क

राष्ट्रीय पार्क में संकटाग्रस्त एवं दुर्लभ प्रजातियों को उनके संरक्षण हेतु रखा जाता है। यहाँ इनकी पूरी देखभाल की जाती है।

Ex- कार्बेट नेशनल पार्क

(ग) संरक्षित जैव मंडल

संरक्षित जैव मंडल से तात्पर्य उन पादप एवं जन्तु प्रजातियों से है जिनके विलुप्ति की संभावना हो।

प्रश्नोत्तर संख्या 24

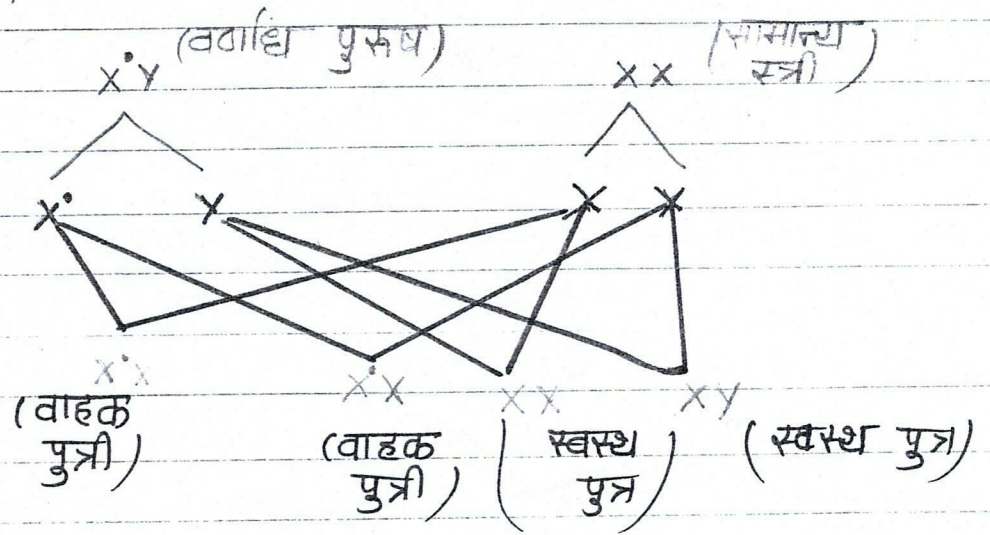
	लघुबीजाणुजनन	गुरुबीजाणुजनन
(1)	लघुबीजाणुमातृकोशिका से अर्द्धसूत्री विभाजन द्वारा लघुबीजाणुओं के निर्माण की प्रक्रिया है।	गुरुबीजाणुमातृकोशिका से अर्द्धसूत्री विभाजन द्वारा गुरुबीजाणुओं के निर्माण की प्रक्रिया है।
(2)	इसमें असंख्य लघुबीजाणुमातृकोशिका से अर्द्धसूत्री विभाजन होता है।	इसमें केवल एक गुरुबीजाणुमातृकोशिका से अर्द्धसूत्री विभाजन होता है।
(3)	सभी लघुबीजाणु कार्यशील होते हैं।	केवल एक गुरुबीजाणु कार्यशील होता है अन्य तीन अपस्राप्ट हो जाते हैं।
(4)	लघुबीजाणु से परागकण का निर्माण होता है, जो नर युग्मकोदभिद का प्रतिनिधित्व करता है।	गुरुबीजाणु से शूणकोष बनती है, जो मादा युग्मकोदभिद का जैतृत्व करती है।

• लघुबीजाणुजनन के अंत में परागकण एवं गुरुबीजाणुजनन के अंत में शूणकोष संरचना बनती है।

• अर्द्धसूत्री विभाजन होता है।

लिंग सहसम्बन्ध गुण - मनुष्य के लैंगिक गुणसूत्रों तथा लिंग गुणसूत्र में पाये जाने वाली जीन से संबंधित गुणों को 'लिंग सहसम्बन्ध गुण' कहा जाता है, किसी जीन को तभी लिंग सहसम्बन्ध तभी कहा जाता है जब उसके बीच पुनर्संयोजन आवृत्ति 50% से कम हो,

वर्धिता - यह एक लिंग सहसम्बन्ध अप्रभावी रोग X-गुणसूत्र युक्त है।



50% वाहक पुत्री (जो रोग का तार में विकास करेगी)
 50% स्वस्थ पुत्र

(क) सड्स संक्रमित से दूसरे में निम्न प्रकार फैलता है।

- संक्रमित व्यक्ति द्वारा रक्त आधान से,
1) गर्भस्व माँ से शिशु को अपरा द्वारा
2) समलैंगिकता या द्विलिंगी क्रिया से,
3)

(ख) 'परहेज की उत्तम उपचार है'

सड्स एक संक्रमित रोग है जिसका उपचार अभी तक ज्ञात नहीं है, परन्तु वैज्ञानिक इसके उपचार की औषधि के खोज में लगे हैं, तब तक संक्रमित सड्स व्यक्ति द्वारा दूरी ही सर्वोत्तम उपाय है।

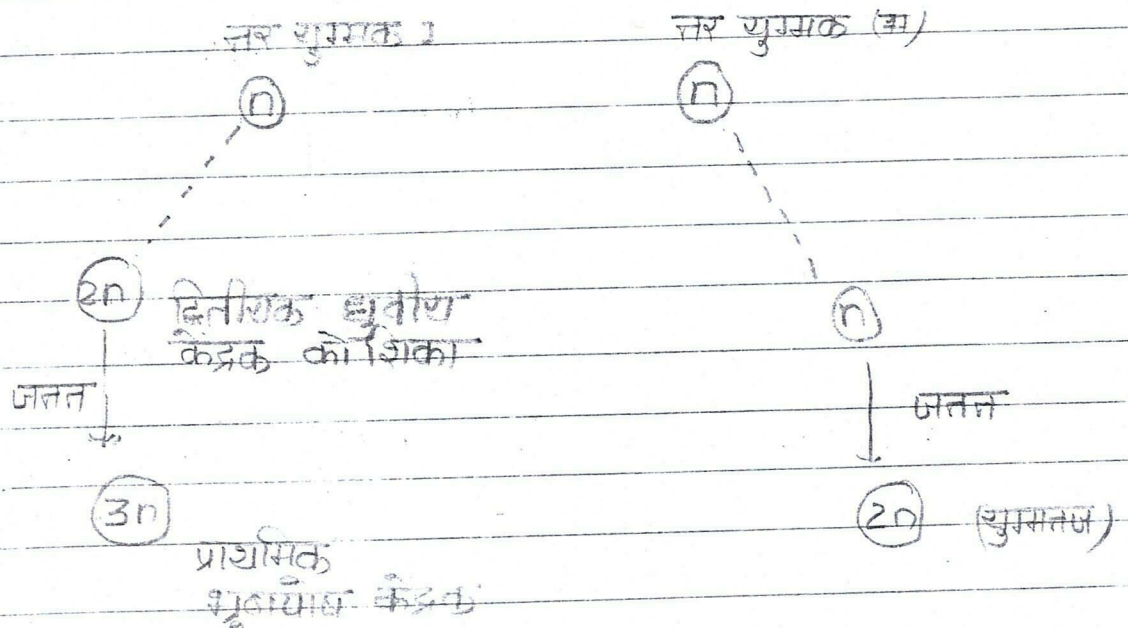
(ग) सड्स नियंत्रण हेतु राष्ट्रीय सड्स नियंत्रण संगठन (NACO) और राज्यों में SACO जैसे कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। लोगों को सड्स शिक्षा के प्रति जागरूक किया जा रहा है, विभिन्न प्रकार के संगठन आरंभ किए गए हैं ताकि सड्स के संक्रमण एवं फैलाव को कम किया जा सके।

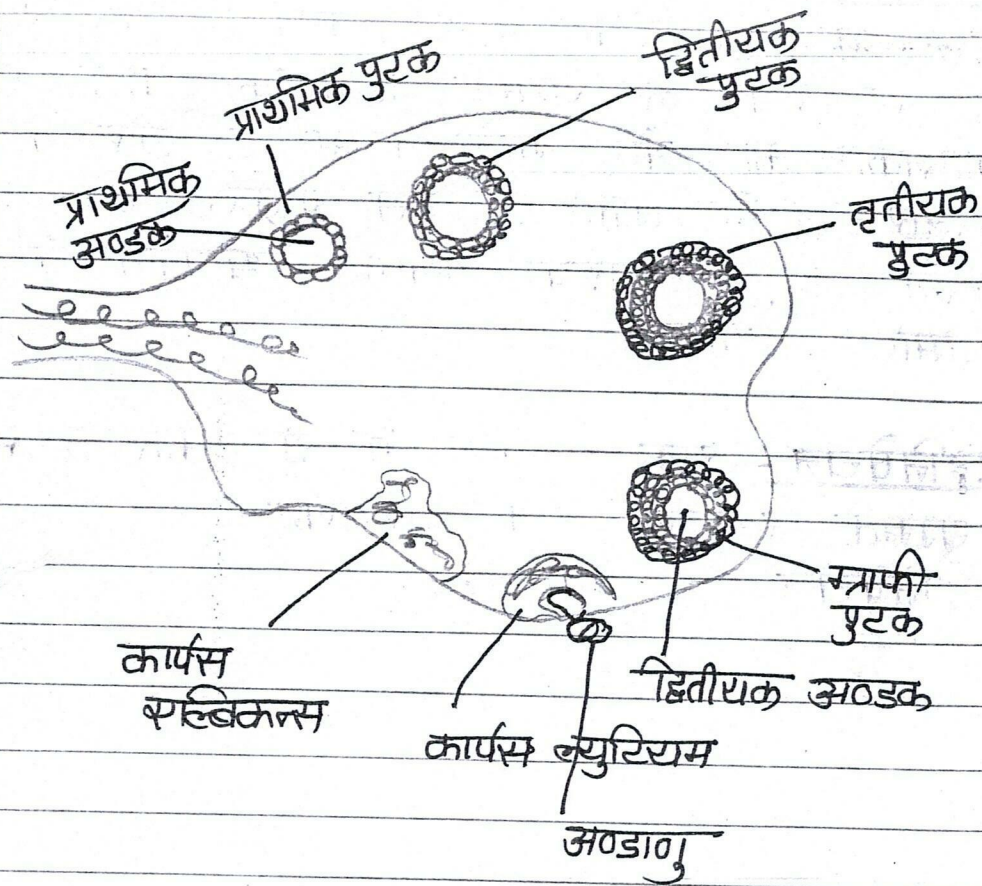
प्रश्नोत्तर संख्या 7

त्रिसंलयन

द्विनिषेचन - परागानलिका द्वारा अवमुक्त दो नर युग्मकों युग्मकों में से एक नर युग्मक द्वितीयक द्वितीय केन्द्रीय कोशिका की ओर गति करता है और केन्द्रक से संलयित हो जाता है, इस प्रक्रिया को त्रिसंलयन कहते हैं; फलस्वरूप प्राथमिक भ्रूणपोष केन्द्र का निर्माण होता है।

द्विनिषेचन - एक भ्रूणकोष में दो प्रकार के संलयन, (युग्मक संलयन एवं त्रिसंलयन) होते हैं, यह प्रक्रिया द्विनिषेचन कहलाती है।





प्रश्नोत्तर संख्या 19

सूकेन्द्रकी में पाए जाने वाले RNA पोलिमिरेज

- पोलिमिरेज I -
- (1) RNA
- (2) RNA " II
- (3) RNA " III

पोलिमिरेज I → r-RNA के निर्माण का कार्य

RNA

RNA " II → m-RNA " " "

RNA " III → t-RNA " " "